दण्ड के प्रकार एवं शिक्षक व विद्यार्थियों का दण्ड के प्रति अभिप्राय : एक अध्ययन

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
एम.एड. (आर.आई.ई.)
उपाधि की आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध प्रबंध

सत्र 2010-2011

निर्देशक

डॉ. बी. रमेश बाबू
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)

शोधकर्ता

नकवाना निशा
एम.एड (आर.आई.ई.)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद)
श्यामला हिल्स भोपाल - 462013

2010:2011

दण्ड के प्रकार एवं शिक्षक व विद्यर्थियों का दण्ड के प्रति अभिप्राय : एक अध्ययन

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
एम.एड. (आर.आई.ई.)
उपाधि की आंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत

D- 336

लघुशोध प्रबंध

सत्र 2010–2011

निर्देशक

डॉ. बी. रमेश बाबू
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)

शोधकर्ता

मकवाना निशा
एम.एड (आर.आई.ई.)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्)
श्यामला हिल्स भोपाल – 462013

घोषणा-पत्र

मैं, **मकवाना निशा**, छात्रा एम.एड. (आर.आई.ई.) यह घोषणा करती हूँ कि **"दण्ड के प्रकार एवं शिक्षक व विद्यार्थियों का दण्ड के प्रति अभिप्राय : एक अध्ययन–"** नामक विषय पर लघुशोध प्रबंध 2010–2011 में मेरे द्वारा **डॉ. बी. रमेश बाबू**, विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, के मार्गदर्शन में किया गया है।

यह लघुशोध प्रबंध मेरे द्वारा बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल की एम.एड. (आर.आई.ई.) 2010–2011 की उपाधि परीक्षा के लिए अंशिक संपूर्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस शोध में दिये गये आँकड़े एवं सूचनायें विश्वसनीय स्त्रोतों तथा मूल स्थानों से प्राप्त है तथा ये प्रयास पूर्णतः मौलिक है।

स्थान : क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

दिनाँक : 28.04.2011

शोधकर्ता

मकवाना निशा

एम.एड. छात्रा (आर.आई.ई)

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,

एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **मकवाना निशा** ने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से शिक्षा में स्नातकोत्तर एम.एड. (आर.आई.ई) उपाधि प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध **"दण्ड के प्रकार एवं शिक्षक व विद्यार्थियों का दण्ड के प्रति अभिप्रायः एक अध्ययन"** हमारे मार्गदर्शन में पूर्ण किया है यह शोध कार्य इनकी निष्ठा, लगन एवं ईमानदारी से किया गया मैलिककृत परिश्रम का परिणाम है, जो पूर्व में इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

हम आशीर्वाद सहित प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध को एम.एड. (आर.आई.ई) बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय की परीक्षा 2010-2011 की आंशिक सम्पूर्ति हेतु स्वीकृति प्रदान करते है।

स्थान : क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
दिनांक : 28.04.2011

निर्देशक

डॉ. बी. रमेश बाबू
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(एन.सी.ई.आर.टी.)
भोपाल (मध्यप्रदेश)

"निर्गुण निराकार

सर्वव्यापी सर्जनहार

परमपिता परमात्मा

के पावन चरणों में"

समर्पित

प्राक्कथन

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की आंतरिक एवं बाह्य शक्तियों को निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर करती है "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् मुक्ति प्रदान करने वाली विद्या ही है। यह मुक्ति समाज में व्याप्त कुरीतियों – अलगाव, हिंसा, द्वेष, बैर और बदि आदि से है।

शिक्षा की जड़ें हमेशा बच्चों की भौतिक और सांस्कृतिक जमीन में गहरे पैठी होती है और कृतिक जमीन में गहरे पैठी होती है और उन्हें माता-पिता, शिक्षकों, सहपाठियों और समुदायों के साथ पारस्परिक क्रियाओं के पोषण मिलता है, इस दायित्व के संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका और प्रतिष्ठा को रेखांकित करने और सुदृढ़ करने की जरूरत है।

बच्चों के साथ मित्रवत् व्यवहार करने वाला व स्व-अनुशासन का पाठ सिखाने वाला शिक्षक ही बच्चों के हृदय में स्थान पा सकता है। बच्चों को सजा देना, मारना, पीटना, धमकी देना, अपशब्द कहना, मजाक उड़ाना, दुर्व्यवहार करना जैसे निंदनीय व्यवहार से शिक्षक अपने गौरव को हानि पहुंचाता है। गुरू शिष्य के इस पवित्र संबंध की गरिमा कायम रखने के लिये शिक्षक को ये दण्डात्मक अनुशासन से दूर रहना होगा।

यह लघु शोध इस दिशा में एक प्रयास है जिससे शिक्षक व विद्यार्थियों के दण्ड के अभिप्राय प्राप्त करने हेतु किया गया है।

शोधकर्ता
N.S. Makwana
मकवाना निशा
एम.एड. छात्रा (आर.आई.ई)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल

आभार-ज्ञापन

सृजन के आत्मीय अनुबंध और स्वजनों के मधुर संबंध से रचे इस प्रयास हेतु मैं उन सभी मर्मज्ञ तथा विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनके ज्ञान, अनुभव और सतत् मार्गदर्शन से इस रचना को आकार मिला है।

सर्वप्रथम मैं अपने मार्गदर्शक **डॉ. बी. रमेश बाबू**, विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग की हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने अपने संरक्षण में मुझे कार्य करने का अमूल्य अवसर प्रदान किया। इनके विशुद्ध विषय ज्ञान, विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन एवं वात्सल्यपूर्ण सहयोग का परिणाम ही यह लघुशोध प्रबंध है। आपने मुझे स्वयं के बहुमूल्य समय में से एक अध्यापक, अभिभावक तथा निर्देशक के रूप में पर्याप्त समय दिया है अतएव मैं आपकी ऋणी रहूँगी।

मैं क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के परम आदरणीय प्राचार्य **डॉ. के.बी. सुब्रमण्यम्**, अधिष्ठाता **डॉ. रीटा शर्मा** तथा **डॉ. एस.के गुप्ता**, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने योग्य मार्गदर्शन तथा अनुकूल वातावरण एवं सुविधाऐं देकर कार्य को सुगम बनाया।

मैं परम आदणीय गुरूजन **डॉ. यू. लक्ष्मीनारायण** एवं **श्री संजय कुमार पंडागले**, प्रवक्ता, शिक्षा विभाग की मैं सहृदय आभारी हूँ जिन्होंने सांख्यिकीय कार्य में अतुलनीय सहायता की।

मैं आदरणीय **डॉ. एन.सी. ओझा, डॉ. के.के. खरे, डॉ. एम.यू. पैईली, डॉ. सुनीति खरे, श्री आनंद वाल्मिकी** तथा अन्य सभी गुरूजनों की आभारी हूँ जिन्होंने मूझे उचित मार्ग दिखाया।

मैं ग्रंथालय प्रभारी **श्री पी.के. त्रिपाठी** तथा संस्था के अन्य सभी कर्मचारियों को धन्यवाद अर्पित करती हूँ।

मैं कृतज्ञ हूँ मेरे दादा- दादी की जिनकी दुआओं के कारण ही आज मैं इस स्थान तक पहुँची हूँ। मैं अपने वंदनीय माता- पिता की सदैव ऋणी रहूँगी। जिन्होंने मेंरे

अध्ययन में तन, मन, धन से अपना आत्यमीय सहयोग, आशीर्वाद व शुभकामनायें प्रदान की मैं अपने भाईयों एवं परिवार के स्नेहिल सदस्यों का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होने कदम – कदम पर मेरा होंसला बढ़ा के मुझे प्रेरित किया।

मैं उन समस्त विद्यालयों (प्रदत्त संग्रहण) के प्राचार्यों, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का उनके प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग के लिए धन्यवाद करती हूँ।

मैं अपने सभी सहपाठियों की विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होनें शोधकार्य पूर्ण करने में मुझे प्रोत्साहन तथा सहयोग दिया।

अंत में मैं अपने मार्गदर्शक के प्रति आभार व्यक्त करने हेतु कुछ पंक्ति प्रस्तुत करती हूँ...

अज्ञानरूपी अंधकार में
ज्ञानरूपी ज्योत जलाने वाले,
कदम–कदम पर पगडंडी बनकर
मार्ग मुझे दिखाने वाले,
हर– पल प्रेरणा स्त्रोत
प्यार से बहानेवाले,
हे गुरूवर!
आभार आपका किन शब्दों में मैं बयाँ करूँ,
आपके चरणों में नतमस्तक हो के शत शत
प्रणाम करूँ।

स्थान : क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
दिनाँक : 28.04.2011

शोधकर्ता
मकवाना निशा
एम.एड. छात्रा (आर.आई.ई)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल

अनुक्रमणिका

विवरण

प्राक्कथन		I
घोषणा–पत्र		II
प्रमाण–पत्र		III
आभार–ज्ञापन		IV-V
		पृष्ठ संख्या
	अध्याय – प्रथम शोध परिचय	
1.1	प्रस्तावना	1–2
1.2	गुरू शिष्य संबंध	2–3
1.3	प्राचीन काल में दण्ड का स्वरूप	3
1.4	उन्नीसवी शताब्दी में दण्ड का स्वरूप	3–4
1.5	बीसवीं शताब्दी में दण्ड का स्वरूप	4
1.6	शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से दण्ड	4
1.7	विद्यालयों में दण्ड क्यों?	4–5
1.8	दण्ड का अर्थ एवं परिभाषाएँ	5–7
1.9	दण्ड के उद्देश्य एवं लक्ष्य	7–8
1.10	दण्ड के प्रकार	8–9
1.11	शारीरिक दण्ड	9
1.12	दण्डात्मक अनुशासन	9–10
1.13	दण्ड के लिये शिक्षक का कार्य	10
1.14	दण्ड का विरोध क्यों?	11
1.15	कोठारी आयोग	11
1.16	भारतीय संविधान	12–14

		पृष्ठ संख्या
1.17	समस्या कथन	14
1.18	अध्ययन की आवश्यकता	14–18
1.19	अध्ययन के उद्देश्य	18–19
1.20	शोध प्रश्न	19
1.21	शोध में प्रयुक्त चर	20
1.22	शोध का परिसीमन	21
1.23	पदों व संकल्पनाओं की परिभाषा	21–22

अध्याय–द्वितीय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1	प्रस्तावना	23
2.2	संबंधित साहित्य का महत्व/लाभ	23–24
2.3	संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन	24–30

अध्याय तृतीय
शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1	प्रस्तावना	31
3.2	शोध की प्रविधि एवं प्रक्रिया	31
3.2.1	शोध अभिकल्प	31
3.2.2	जनसंख्या	32
3.2.3	न्यादर्श का चयन	32–33
3.2.4	प्रयुक्त उपकरण	33–34
3.2.5	प्रदत्तों का संकलन	34–36
3.2.6	प्रदत्त संकलन में उत्पन्न हुई कठिनाईयाँ	36
3.2.7	प्रदत्तों का विश्लेषण	36–37

पृष्ठ संख्या

अध्याय – चतुर्थ
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1	प्रस्तावना	38
4.2	प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या	39–52
4.3	परिणामों की व्याख्या	52–54

अध्याय पंचम
शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1	प्रस्तावना	55–56
5.2	समस्या कथन	56
5.3	शोध में प्रयुक्त चर	56–57
5.4	शोध के उद्देश्य	57
5.5	शोध की परिकल्पना	57–58
5.6	शोध का परिसीमन	58
5.7	न्यायदर्श का चयन	59
5.8	प्रयुक्त उपकरण	59
5.9	प्रयुक्त सांख्यिकी	59
5.10	प्रदत्तो का विश्लेषण	60
5.11	परिणाम	60–61
5.12	निष्कर्ष	61–62
5.13	शोध सुझाव	62–63
5.14	भावी शोध हेतु सुझाव	63–64

संदर्भ ग्रंथ सूची VI-VII

परिशिष्ट

तालिका सूची

तलिका क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.1	Corporal punishment in India reports by children	18
2.3.1	The study coverage: stake holders types	25
3.1	न्यादर्श का विवरण	33
3.2	प्रदत्त संग्रहण का विवरण	35
4.1	छात्रों का दण्ड के प्रकारों के प्रति अभिप्राय	39
4.2	छात्राओं का दण्ड के प्रकारों के प्रति अभिप्राय	40
4.3	विद्यार्थियों का दण्ड के बारे में सकारात्मक व नकारात्मक अभिप्राय	42
4.4	शिक्षकों का दण्ड के बारे में सकारात्मक व नकारात्मक अभिप्राय	43
4.5	पुरूष और महिला शिक्षकों के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता	44
4.6	ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता	45
4.7	शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के बीच दण्डके अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता	46
4.8	गुजराती एवं अंग्रेजी माध्यम के शिक्षकों के बीच दण्डके अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता	47
4.9	शिक्षकों के अनुभव के आधार पर दण्ड के अभिप्राय की सार्थकता	48
4.10	शिक्षकों के विषय के आधार पर दण्ड के अभिप्राय की सार्थकता	49
4.11	छात्राओं और छात्रों के बीच में दण्ड के अभिप्राय के बारे में "t" की सार्थकता	50
4.12	शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के बीच दण्ड के अभिप्रय क बारे में "t" की सार्थकता	51
4.13	गुजराती और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बीच में दण्ड के अभिप्रय के बारे में "t" की सार्थकता	52
5.1	प्राप्त परिणामों का निष्कर्ष	60

रेखा चित्रों की सूची

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	कक्षा नवमीं के छात्रों का दण्ड के प्रकरों के बारे में विवरण	40
2.	कक्षा नवमीं के छात्राओं का दण्ड के प्रकरों के बारे में विवरण	41
3.	छात्र एवं छात्राओं का दण्ड के सकारात्मक व नकारात्मक अभिप्रायों का विवरण	42
4.	पुरूष शिक्षक एवं महिला शिक्षिकाओं का दण्ड के सकारात्मक व नकारात्मक अभिप्रायों का विवरण	43